बच्चे किनके सामने बैठे हैं। बुद्धि में जरूर चलता होगा कि हम पतित–पावन सर्व का सदगति दाता अपने बेहद के बाप के सामने बैठे हैं। भल ब्रह्मा के तन में हैं तो भी याद उनको ही करना है। मनुष्य कोई सर्व की सदगति नहीं कर सकते हैं। मनुष्य को पतित–पावन नहीं कहा जा सकता है। बच्चों को अपने को आत्मा समझना पड़े। हम सभी आत्माओं का बाप वो है। वो बाप हमको स्वर्ग का मालिक बना रहे हैं। यह बच्चों को जानना चाहिए और खुशी भी होनी चाहिए। यह भी बच्चे जानते हैं हम नर्कवासी से स्वर्गवासी बन रहे हैं। बहुत सहज रास्ता मिल रहा है। सिर्फ याद करना है और अपने में दैवी गुण धारण करने हैं। अपनी ही जांच रखनी है। नारद का भी मिसाल है ना। यह सब मिसाल ज्ञान के सागर बाप ने ही दिये हैं। जो भी सन्यासी आदि मिसाल देते हैं वो सब बाप के ही दिये हुये हैं। भक्तिमार्ग में सिर्फ कछुये का ,भ्रमरी का,सर्प का सिर्फ मिसाल देते हैं ;परंतु कुछ भी कर नहीं सकते हैं। बाप के दिये हुये दृष्टान्त भक्तिमार्ग में फिर रिपीट करते हैं। भक्ति मार्ग है ही पास्टकाल। इस समय जो2 प्रैक्टिकल में होता है उनका फिर गायन होता है। भल देवताओं का जन्मदिन अथवा भगवान का जन्मदिन मनाते हैं ;परंतु जानते कुछ भी नहीं हैं। अभी तुम बच्चे समझ गये हो। बाप से शिक्षा लेकर पतित से पावन भी बन जाते हो। पतितों को पावन बनने का रास्ता बताते रहते हो। यह है तुम्हारी मुख्य रुहानी सर्विस। पहले2 कोई को भी आत्मा का ज्ञान देना है। तुम आत्मा हो। आत्मा का भी किसी को पता नहीं है। एक छोटी सी बूंद से कितना बड़ा शरीर बनता है। जैसे इतने छोटे बीज से झाड़ कितना बड़ा निकलता है। आत्मा तो अविनाशी है। जब समय होता है आत्मा आकर शरीर में प्रवेश करती है। तो अपने को बार2 आत्मा ही समझना है। मुझ आत्मा का बाप परमपिता परमात्मा है। यह अक्षर ठीक रीति बुद्धि में धारण करो। फिर यह भी तुम जानते हो कि वो ही परमपिता भी है। परमटीचर भी है। यह भी हरदम बच्चों को याद रहना चाहिए। यह भूलना नहीं चाहिए। तुम जानते हो कि अब वापस जाना है। विनाश सामने खड़ा है। सतयुग में दैवी परिवार बहुत छोटा होता है। कलयुग में तो कितने ढेर मनुष्य हैं। अनेक धर्म,अनेक मतें हैं। सतयुग में तो यह कुछ भी नहीं होता है। बच्चों को सारा दिन बुद्धि में यही बातें आनी चाहिए। यह पढ़ाई है ना। उसमें ....कितने किताब आदि होते हैं। हर एक क्लास में नये2 कितब खरीदने पड़ते हैं। यहां पर तो कोई भी किताब वा शास्त्रों आदि की बात नहीं है। इसमें तो एक ही बात एक ही पढ़ाई है। यह चित्र आदि भी छपवाए हैं तो बच्चों आदि को समझाने लिए। बाकी यह कोई रहने नहीं हैं। जिनका राज्य होता है उनका अपनी ही पढ़ाई अपनी ही भाषा चलती है। यहां ब्रिटिश गवर्मेंट का राज्य था तो गज,वजन आदि दूसरे थे। अभी तो मीटर ,किलोमीटर आदि क्या2 कहते रहते हैं। प्रजा का प्रजा पर राज्य है तो सब कुछ बदलता जाता है। आगे स्टैम्प में भी राजा–रानी के बिना और कोई का फोटो नहीं डालते थे। आजकल तो देखो भक्त जो होकर गये हैं उनके भी स्टैम्प बनार्ते रहते हैं। दिन प्रतिदिन अपनी2 स्टैम्प्स बनाते जाते हैं। धनी–धोनी कोई एक तो है नहीं। इन ल.ना. का राज्य होगा। तो चित्र भी एक ही महाराजा–महारानी को होगा। ऐसे नहीं कि जो पास्ट होकर गये हैं उनको लाखों वर्ष हुये तो मिट गये हैं। नहीं। पुराने ते पुराने राजा लोग जिनके चित्र भी बिकते हैं। कृष्ण का चित्र बहुत दिल से लगता है ;क्योंकि शिवबाबा के बाद है यह। सूक्ष्मवतन से तो तुम्हारा कनैक्शन ही नहीं है। यह सभी बातें तुम बच्चे धारण कर रहे हो औरों को रास्ता बताने लिए। यह है बिल्कुल नई बात। नई पढ़ाई। तुमने ही यह सुनी थी और पद पाया था और कोई नहीं जानते हैं। तुमको राजयोग परमपिता परमात्मा सिखा रहे हैं। महाभारत की लड़ाई भी मशहूर है। क्या होता है सो तो आगे चलकर देखेंगे। कोई क्या कहते हैं ,कोई क्या कहते हैं। लिखते हैं कि स्टार गिरेगा तो 100फुट समुद्र उछल जावेगा। फिर तो सब खण्ड ही डूब जावेंगे। दिन प्रतिदिन मनुष्यों को टच होता जाता है। कहते भी हैं वर्ल्ड वार लग जावे

इसके पहले ही तुम बच्चों को अपनी पढ़ाई से राजाई प्राप्त करनी है। बाकी असुरों और देवताओं की कोई लड़ाई नहीं हुई है। इस समय तुम ब्राह्मण सम्प्रदाय हो। जो ही फिर दैवी सम्प्रदाय बनते हो। तुम दैवी गुण धारण कर रहे हो। नम्बरवन दैवी गुण है पवित्रता का। तुम इस शरीर द्वारा कितने पाप करते आये हो। आत्मा को ही पापात्मा कहा जाता है। आत्मा इस शरीर द्वारा कितने पाप कर रही है। तो हियर नो ईविल.....किसको ही कहा जाता है?आत्मा को। आत्मा ही कानों से सुनती है। बाप आत्मा को कहते हैं तुम बच्चे सुखधाम का मालिक कैसे बनते हो?अभी यह समझना है। याददाश्त आती है कि हम ही आदि सनातन देवी देवता धर्म वाले चक्र लगाकर आये हैं। अब फिर तुमको तो वो ही बनना है। कितनी अच्छी और मीठी2 बातें हैं। जिससे तुम इतने ही मीठे बनते हो। तुम्हारी बुद्धि में है कि हमने कैसे 84का पार्ट बजाया है। पहले2 हम यह थे। यह कहानी है ना। बुद्धि में आना चाहिए ना कि 5हजार वर्ष पहले हम सो देवी देवता थे। हम आत्मा मूलवतन की रहने वाली हूँ। आगे तो यह जरा भी खयाल नहीं था कि हम आत्माओं का वो घर है। वहां से हम आते हैं पार्ट बजाने। सूर्य चंद्रवंशी फिर वैश्य शूद्रवंशी बनते हैं। अभी तुम ब्रह्मा की संतान ब्राह्मणवंशी हो। तुम ईश्वरीय औलाद बने हो। ईश्वर बैठ तुमको शिक्षा देत हैं। वो सुप्रीम बाप,टीचर,गुरू भी है। हम उनकी ही मत से सभी मनुष्य को श्रेष्ठ बनाते हैं। मुक्ति जीवनमुक्ति दोनों ही श्रेष्ठ हैं। हम अपने घर जावेंगे फिर पवित्र बनकर आकर राज्य करेंगे। यह चक्र है ना। इसको कहा ही जाता है स्वदर्शन चक्र। चक ज्ञान की बातें हैं। बाप कहते हैं तुम्हारा यह स्वदर्शन चक्र खड़ा नहीं रहना चाहिए। फिराते ही रहने से विकर्म विनाश हो जावेंगे। तुम इन रावण पर जीत पा लेंगे। पाप मिट जावेंगे। अब याद आई है याद करने लिए। ऐसे नहीं कि माला बैठकर फेरनी है। आत्मा में ही अंदर में ज्ञान है ,जो तुम बच्चों को फिर भाई—बहनों को समझाया है। बच्चे भी मददगार तो बनेंगे ही ना। तुम बच्चों को ही स्वदर्शनचक्रधारी बनाता हूँ। यह ज्ञान मेरे में ही है। इसलिए ही मुझे ज्ञानसागर मनुष्य सृष्टि का बीजरूप कहते हैं। उनको बागवान कहा जाता है। मनुष्य सृष्टि के नये झाड़ का बीज बोते हैं। देवी देवता धर्म का बीज शिवबाबा ने ही लगाया है। अभी तुम देवी देवता धर्म का बन रहे हो। यह सारा दिन याद करते फिराते रहो तो भी तुम्हारा बहुत कल्याण है। दैवी गुण भी धारण करने हैं। पवित्र भी जरूर बनना है। स्त्री—पुरुष दोनों इकट्ठे रहते पवित्र बनते हो। ऐसा धर्म तो होता नहीं है। निवृत्ति मार्गवाले हैं.....
.....कहते हैं कि स्त्री—पुरुष दोनों इकट्ठे पवित्र रह सकें यह मुश्किल है। अरे, सतयुग में थे ना। ल.ना. की महिमा भी गाते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो बाबा हमको शूद्र से ब्राह्मण बनाकर फिर देवता बनाते हैं। फिर हम पूज्य से पुजारी बनेंगे। वाम मार्ग में जावेंगे तो शिव का मंदिर बनाकर पूजा करेंगे। तुम बच्चों को अपने 84जन्मों का ज्ञान है। बाप ही कहते हैं कि तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो मैं ही बताता हूँ। यूं और कोई मनुष्य कह नहीं सकते हैं। 84का चक्र गाते भी हैं ;परंतु वो फिर 84लाख कह देते हैं। बात ही उड़ जाती है। तुमको अब बाप स्वदर्शन चक्रधारी बनाते हैं। तुम आत्मा पवित्र बन रही हो। शरीर तो यहां पर पवित्र बन नहीं सकता है। आत्मा पवित्र बन जाती है तो फिर अपवित्र शरीर को छोड़ना पड़ता है। सब आत्माओं को पवित्र होकर जाना है। प्योर दुनियां अब स्थापन हो रही है। बाकी सब स्वीट होम में चले जावेंगे। यही याद रखना चाहिए। अब हम वापस जाते हैं। अभी बाप और घर को याद करना है। घर में बाप को याद करो। भल तुम जानते हो कि बाबा इसमें बैठे हुये हमको सुनाय रहे हैं ;परंतु बुद्धि में परमधाम स्वीटहोम में लौटनी यही चाहिए। टीचर घर छोड़कर तुमको पढ़ाने आते हैं। पढ़ाकर फिर बहुत दूर चले जाते हैं। सेकेंड में कहीं पर भी जा सकते हैं। आत्मा कितनी छोटी बिंदी है। वंडर खाना चाहिए। आत्मा का भी बाप ने ज्ञान दिया है। यह भी तुम्हीं बच्चे जानते हो कि स्वर्ग

में कोई गंदी चीज होती नहीं है जिससे कि हाथ,पांव अथवा कपड़े आदि मैले होते हों। देवताओं की कितनी सुंदर पहरवाइस है। कितने फर्स्टक्लास कपड़े होंगे। धोने की भी दरकार नहीं है। इनको देखकर कितनी खुशी होनी चाहिए। आत्मा जानती है कि भविष्य में 21 जन्मों तक हम यह बनेंगे। बस। देखते ही रहना चाहिए। यह चित्र (ल.ना.)सबके पास होना चाहिए। इसमें बहुत खुशी चाहिए। हमको बाबा यह बनाते हैं। ऐसे बाबा के बच्चे फिर रोते हैं। हमको कोई फर्क थोड़े ही होना चाहिए। देवताओं के मंदिर में जाकर महिमा करते हैं सर्वगुण सम्पन्न... .....अच्युतम् केशवम्.....कितने नाम बोलते जाते हैं। यह सब शास्त्रों में ही लिखा हुआ जो कि याद करते हैं। शास्त्रों में किसने लिखा?व्यास ने। यहां कोई नये2 भी बनाते रहते हैं। ग्रंथ आगे तो बहुत छोटा था। हाथ का लिखा हुआ था। अभी तो कितना बड़ा बना दिया है। जरूर एडीशन किया हुआ होगा। अब गुरूनानक क्या आकर ज्ञान देंगे। वो तो आते ही हैं धर्म की स्थापना करने। ज्ञान देने वाला तो एक ही है। गुरूनानक का ग्रंथ पढ़ने से क्या होगा?कुछ भी नहीं। सदगति हो नहीं सकती है। तो फिर उनको गुरू भी नहीं कहा जावे। क्राइस्ट भी आते ही हैं सिर्फ धर्म स्थापन करने लिए। जब सब आ जाते हैं तो फिर वापस जावेंगे। घर भेजने वाला कौन?क्या क्राइस्ट है?नहीं। वो तो तमोप्रधान अवस्था में है। सतोप्रधान,सतो,रजो,तमो। इस समय सभी तमोप्रधान हैं। सबका विनाश होना है। इस समय सभी की जड़जड़ीभूत अवस्था है। पुनर्जन्म लेते2 सब धर्म वाले इस समय तमोप्रधान आकर बने हैं। फिर जरूर चक्र फिरना चाहिए। पहले नया धर्म चाहिए ,जो कि सतयुग में था। बाप ही आकर आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना करते है। फिर विनाश भी होना है। स्थापना ,विनाश फिर पालना। सतयुयग में तो एक ही धर्म होगा। यह याददाश्त आती है ना। सारा चक्र याद करना है। अभी हम 84ा चक्र पूरा करके वापस घर जाते हैं। तुम बोलते—चालते स्वदर्शनचक्रधारी हो। वो फिर कहते हैं कि कृष्ण को स्वदर्शनचक्र था। उनसे ही सबको मारा। अकासुर,बकासुर आदि के चित्र भी दिखाये हैं ;परंतु ऐसी तो कोई बात ही नहीं है। स्वदर्शन चक्र से पाप कटते हं। आसुरीपना खतम होता है। देवताओं और असुरों की लड़ाई तो हो नहीं सकती है। असुर हैं कलियुग में ,देवतायें हैं सतयुग में। बीच में है संगमयुग। शास्त्र हैं ही सभी भक्तिमार्ग के। ज्ञान का नाम निशान नहीं है। ज्ञान सागर एक ही बाप है सबके लिए। सिवाय बाप के कोई भी आत्मा प्योर बनकर वापस जा ही नहीं सकती है। पार्ट जरूर बजाना है। तो अब अपने 84के चक्र को भी याद करना है। अभी सतयुगी नये जन्म में जाते हैं। ऐसा जन्म फिर कब नहीं मिलता है। शिवबाबा फिर ब्रह्मा बाबा लौकिक पारलौकिक और फिर यह है अलौकिक बाबा। इस समय की ही बात है। इनको अलौकिक कहा जाता है। तुम बच्चे इस शिवबाबा को ही याद करते हो। ब्रह्मा को नहीं। भल ब्रह्मा की मंदिर में जाकर पूजा करते हैं। वो भी तब पूजते हैं जबकि सूक्ष्म में अव्यक्तमूर्त है। यह शरीरधारी पूजा के लायक नहीं है। यह तो मनुष्य हैं ना। मनुष्य की पूजा नहीं होती है। ब्रह्मा को दाढ़ी—मूंछ दिखाते हैं। त्रिमूर्ति के चित्र में कब भी तीनों को नहीं दिखाते हैं। कब फिर ब्रह्मा को दाढ़ी दिखाते हैं कि पता पड़े यह कहां का है। देवताओं को दाढ़ी होती नहीं है। यह सब बातें बच्चों को समझा दी हैं। तुम्हारा नाम बाला है। इसलिए तुम्हार मंदिर भी बना हुआ है। सोमनाथ का मंदिर कितना उंच ते उंच है। सोमरस पिलाया फिर क्या हुआ?.....यह दिलवाला मंदिर देखो। मंदिर हूबहू यादगार का बना हुआ है। नीचे तुम तपस्या कर रहे हो। उपर में स्वर्ग है। मनुष्य समझते हैं कि स्वर्ग कहीं उपर में है। मंदिर में भी नीचे स्वर्ग कैसे बनावें?तो उपर छत में बना दिया है। बनाने वाले कोई समझते ही नहीं हैं। बड़े2 करोड़पति भी हैं। उनकी अहमदाबाद में बड़ी कमेटियां हैं। उनको पकड़ना चाहिए। दिलवाला मंदिर पर जो तुम्हारा किताब बना हुआ है वो उनको देना चाहिए। बोलो आकर समझो हम आपको दिलवाला मंदिर की पूरी समझानी देंगे। ओम।